

अथ एक दन्त लोचन प्रा०

श्रीगणेशाय नमः ॥ महासुरैः सुशान्तिं वैदुः स्याद्विष्णुपु
र्याः सुशान्तिः ॥ भृशमादयच्च मुनयो लकदन्तं समा य युः
॥१॥ पुनश्चैतं पुनश्चादौ पुनस्ताने पुनश्चादौ ॥ तुव
कुर्वन्तं युक्ता लकदन्तं गणेश्वर ॥ २ देवर्षयः कृपुः ॥ स
दास्य रूपं सकलादि भूत प्रजा यिनं सोऽहं प्रथित्य वो
धं ॥ अत्रादि प्रजाति विहीन मेव तमेक दन्तं शांतिं
मात्रं ॥ ३ ॥ अत्रादि चिद्रूप मयं गणेश्वर जे दमे वा
देवि होत माद्यं ॥ हृदि प्रकाश स्य धर्तृ स्थितीत्यतः ॥
४ ॥ विष्णोदि भूतं हृदि यो गिनावे पुनश्च स रूपेण विभा
तमेव ॥ लदा निरात्म लमा जे ग मयं त ॥ ५ ॥ आत्मे नि
म्वभावेन विभास युक्तं विन्दु स्वरूपारचिता लमा
॥ तस्मात् स्वरूपे पुनश्चाति ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥
येण मयं भूता माकात का लरु चित्त च तव भूत ॥ ७ ॥
कान्तं कं ह्यो ज्ञात प्रा पुतीर्तं ॥ ८ ॥ त्वदे य स नो
धर मेक दन्तं गणेश्वर मेव तव यो धितार्त्तं मेव तव
पुनश्च मयं वि लंथा ल ॥ ९ ॥ तत स्त्व वा पुनश्च त
व नाद लो ने द मेव र चित्तं जगते ॥ अत्राद रूपं स
मात्र लंथा त ॥ १० ॥ तदेव विस्व कृप या तवेव लंथा
त माद्यं तम सा विभात ॥ अत्राद रूपं स ज मेक भू
तं त ॥ ११ ॥ तस्मात् तव पुनश्च मेव तेन सृष्टं पु
नश्च मयं तव लंथा ॥ तस्मात् तव मेव तम लंथा
तं त ॥ १२ ॥ अत्राद रूपं तव सा ज हो हं लंथा क
पं विनिर्जितं तव ॥ तदेव रूपं कृप या तव लंथा त ॥
१३ ॥ लमे रितं तव सा ज हो हं लंथा त ॥ तदेव रूपं
तव सा ज हो हं लंथा त ॥ तदेव रूपं कृप या तव लंथा त ॥

मागु तत्त्वस्य ह्यस्य विभाति विनो कितं तत्कृ पञ्चाय द
॥ त दा विभिन्नं अवलेद रूपं त ० ॥ १४ ॥ एव च सृष्टु
पु कृति स्त्र भावा ना दं नोरे त्व च विभा ति नि त्तं ॥ १५ ॥
पु पु दा ता जग ता थ दृक् त ० ॥ १५ ॥ एव दा जग ता भा
मि गु हा दृ च लवे नि क्षत्र रूपा हि वि भा ति खे वे ॥ १६ ॥
हि ना नी त्व पा धृ ता नि त ० ॥ १६ ॥ एव दा जग ता लु वि द
रो वि धा ता त्व दा जग ता पा ज क ए व वि द्या ॥ १७ ॥ एव दा ज
का ल र को ह्ये पि त ० ॥ १७ ॥ एव दा जग ता भू मि ज ले च स
स्था य दा जग ता पः पु न र्ही न द्य ॥ १८ ॥ सी मा त दा र द्य
मे ल सु द ल ० ॥ १८ ॥ य दा जग ता दे व ग लो दि वि स्थो द
दा ति वे क र्म दि जा नि नि त्तं ॥ १९ ॥ य दा जग ता सौ ज ग लो च ले
वे द ० ॥ १९ ॥ य दा जग ता सौ द द्य च वे य दा जग ता सौ
द स्य च द्य सः य दा जग ता द्य ज ध र्मे र्म मा च त ० ॥ २० ॥
य दा जग ता का ति वि भा ति वा यु र्म दा जग ता नि र्ग र रा
दि र्म स्थः ॥ २१ ॥ य दा जग ता वे ल च ए च त ० ॥ २१ ॥ एव
नो रे ल स्थित मे क गू ठ य दा जग ता सर्व मि द वि भा ति
॥ २२ ॥ एव न रूप द्दि को ध र्म वे त ० ॥ २२ ॥ य यो गी नो यो
ग वे ले न सा ध र्म र्म नि र्म दः लव ने न सौ ति त ० ॥ २३ ॥ पु
रा मे न लु मि दि दो लु त ० ॥ २३ ॥ गृ ह्य म द ड वा च
म र्म लु वा च पु र्मा दः द काः स लं मु न य द्य वे
ह्यी भा र्म पु प द्ये व न गृ तु र्म र्म पु ता ॥ २४ ॥ स ता मु
का च प्री ता सा ध र्म द न लवे ने वे ॥ २५ ॥ ज ग ता न स
भा गा नु दे व को भ र्म वे त स ज ॥ २५ ॥ पु न नो र्म
लो ने र्म पु ता र्म वि स लु ग वि त ॥ २६ ॥ एव त व र दो र्म
वे त ० ॥ २६ ॥ एव त व र दो र्म वे त ० ॥ २६ ॥ एव त व र दो र्म

विनाशाय ॥७॥ अहं ए गदि दारिद्र्य ये चान्ये चात्र मृते वः ॥
अथ कसे द्वा प्र न ला पा न द्यं तु प्र न ल व द्वा ॥८॥ अतु विव क्तु
राह धन मो म पु न त्रि ता ल नः ॥ तु सो द द लि ला मु अ म व
ह लि त ल द्वा रा त ॥९॥ वि हि वि द्वा क वि द्वा न प्र नु का न
मु द्वा क था ॥ त न र्वा ल व ल ले न गु ह ए जो प्र न व न ॥१०॥
पु त्रा न्द हि ध न्द हि ला म लि द्वा रा न तः ॥ अह द्वा रि त
दुः खे न द्वा तु ला च अ द्वा न तः ॥११॥ ह नि ह न्द द्वा निः ह लो
दं र्क लो तो च ध ए तु र्कः प्र ह ति शि वे म प न्ने ती हो म रे

धन दो पुका

हो ओ ल्क न्द पु ए ए भा व पु र्क अह मो च द्वा म ग
लो र्क र्क ॥ ११४ ॥

अथ य इव गो ता प्रा रम्भः ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ पदि व ड वा च ॥ पु त्रा द्वा रा द व ए द्वा पु उ र्क वा
ल व रि व द्वा क द्वा न व्वा भी क्क द्वाः भा न ॥ द्वा म गि द्वा र्क न व लि क्क वि भी
म रा दी नु न्वा नि म्वा न्वा प्र भा ग व त्वा ल्म ए मी ॥१॥ लो म ह र्क रा ड्वा न
॥ ध न्ने वि व र्क रि द्वा वि छि र्को र्क ने न पार्क पु ए द्वा ति व्को द्वा र्को र्क ने
न ॥ द्वा तु र्क न द्वा ति ध न्ने ग य्को र्क ने न म्वा ड्वा तु र्क क्क थ प त्क न व नि
दु ग्गाः ॥२॥ अहो वा च ॥ ये म्वा न वा वि ग त ए म्वा प ए व द्वा ना ए व ए र्क
र गु र्क ल त र्क ल्म ए नि ॥ अने न त ते न ह त कि वि व र्क च त ना ले म्वा तुः
प यो ध ए र्क न पु नः वि र्क ति ॥३॥ ह न्द ड्वा च ॥ ना ए य हो ना म्वा न्ने
ए रां पु लि द्वा र्को र्क थि त पु थि व्वां ॥ अने क ज न्ना गि ति पा य ल व
ह ल्म हो र्क ल्म ए त ल द्वा व ॥४॥ अ धि र्छि र्ड्वा च ॥ मि द्वा द्वा म्वा पी त
को ह्वा प व ली भी व ली र्क को लु मो द्वा लि त ग म्वा ॥ पु रा यो वे तं पु रा
ह्वा म्वा म्वा र्क वि द्वा व न्दे ल व लो र्क क्क ना म्वा ॥५॥ मो म ले न ड्वा च
॥ ज लो द्वा म्वा ल्म ए च ए ध ए वि ला रा को द्वा र्क वि व र्क पु
ना म्वा ल्म पु द्वा तु त प्क न व रा ह्वा लि द्वा ल्म ए च र्क पु र्क ग व्वा - पु
दं वा म्वा ॥६॥ अह न्द ड्वा च ॥ अ गि त म्वा म्वा न न्द म्वा त म्वा व र्क वि
मि त्वा नि त म्वा म्वा व न म्वा ॥ अ लो क्क वि ला र्क वि व र्क

ह्रीं पुन-तो लिगा ति प्रहात्मनां ॥७॥ नकुल उवाच ॥ यदि
यत्र प्रधात्ता काल जाहातु वदो यदिच कुन विहा ने ताप ते
दिने कीट ॥ कृमि हत प्र पि गत्वा जायेते चान्न रात्ता प्र म न
वतु हृदि फले के हावे पु निरे का ॥८॥ लह देव उवाच ॥ त
त्प जग वा ह स वि शाते र तु न त जगः ॥ पुराण म ये प कुर्व
नि ते ला प्र वि न मो न मः ॥९॥ कु-ल्यु वाच ॥ त्व कर्म क्व नि
दि र्घं पां पां यो र्बि क्ता म्प ह म् ॥ त स्मा त स्मा ह् जि के दा ल
पि र्भ मि र्दु टा लु मे ॥१०॥ प्रादु पु वाच ॥ कृष्णो र ताः कृष्ण
प्र तु स्म र ति रा त्री च कृष्ण पु न ह लि ता वे ॥ ते लि न्न दे हाः
पु वि ह नि कृ र्णा ह वि र्ध था मं च हु तं हु ता दा ॥११॥ पु न्न
उवाच ॥ की र्ते सु पा द्ये पु श्च मे लु ली नृ पे पु र हः पि दा
च प्र नु मे व्य पि य न प्र व ॥ गत स मे प्र व तु के हा व ल
पु ला दा त्व ये व भ मि र च का उ व मि चा रि ॥१२॥ पु न्न
लु भ को वाच ॥ ए को पि कृष्ण त्व कृ तः पु ला मे द द्वा द्वा मे ल
ब नृ थे न तु ल्यः ॥ द हा ए मे धी पु र र ति न म कृ र्णा पा ता
मी न पु न र्ज ना म् ॥१३॥ पु न्न मि प्र नु द वा च ॥ गो वि न्द गो
न द र्ते पु र र गो वि न्द गो वि न्द र भो ग का हो ॥ गो वि न्द गो वि
न द पु कृ न्द कृ र्णा गो वि न्द गो वि न्द न मो न म्प ॥१४॥ प्र व धु
म न्द उवाच ॥ श्री ए म ना ए ज ए वा लु दे व गो वि न्द के क र्णा पु कृ
न कृ र्णा ॥ श्री के ल वा र्ज त नृ र्बि ह मि ह्यो श्री ना कि र्म ला पु न्ग
द र्ते ॥१५॥ ला त्प के द वा च ॥ अ पु मे य ह रे वि र्ता कृ र्णा दा
मो द ए च्छू त ॥ गो वि न्दा न न्द ल र्ब हा ना नु दे व न म्प ॥१६॥
ई दु व उवाच ॥ व ल्लु दे वं पी र्त्त म्प ये र्ज दे व पु पा ल ते म त्
मि ता म्प क वी ता र्क ये वां छ ति दु र्ज गः ॥१७॥ यो र्म उवाच
॥ अ पु नां मि ने हा व ना ल न ल्य दि वा च रा त्री च ज था मि
र क्ता ॥ य द्वा मि कि मि न्दु र्ते म्प ना र्द ना मे न कृ त न
पु म्प ॥१८॥ उ र्ज उवाच ॥ अ पु नां मि ने हा व ना ल न ल्य दि वा च
इ च मी ता यो रे पु ला द्वा दि पु र्ब म्प ना ॥ मि की र्ज ना म्प
॥ हा व म्प मि पु न्द दुःखा पु र्बे न म्प ति ना ॥१९॥ अ पु र्क

१५ वाच ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

[illegible]

नी ॥ तस्मात्तु चरितं येन कृष्णं पूजाय कल्पते ॥ ४८ ॥ ओं शुक्ल
व ॥ ४९ ॥ चतुर्भुजः कृष्णवृक्षो लावनीतः कामधेनवः ॥ चिन्ता मणिः
गोविन्दस्य तस्मात्तन्नामार्चयेत् ॥ हरिदुवाच ॥ जयति जयति
वो देवकी नन्दनो यं जयति जयति कृष्णो कृष्णार्चयन् पुद्गे जं
जयति जयति मेघद्वयमलः कोमलमगो जयति जयति पृथ्वीभा
ना हो मुकुन्दः ॥ ५० ॥ शिवजा जगदुवाच ॥ ओं मन्त्रं सिद्धिदं विष्णवे
गङ्गा देव्यं शायं गायन् को जहा मनाप्यभयो मधाय ॥ कृष्णाय कृष्ण
कृष्णाय गिर्गुणी रोगकृष्णाय हृदयगुरवे नमस्ते ॥ ५१ ॥ अ
रिन्दुवाच ॥ कृष्ण त्वदीयपदं जंजलं जंजलं तेऽप्युद्योतये वि
तुमानं स राजर्षिः ॥ प्राणं प्रकाशं लक्षणं कृष्णं वातपित्तैः क
पैश्चैव सधनं विधौ स्मरन् रक्षितं ॥ ५२ ॥ विदुर्दुवाच ॥ हरेर्नाम
मेव नामैव नामैव मन्त्रमीव नमः ॥ कर्णो नास्ति न नास्ति न नास्ति
व जतिरन्यथा ॥ ५३ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ कृष्णोति मूर्तिर्गोविन्दो नाम
वाचि ॥ जयति गङ्गा स्नानं कर्तुं तस्मात्पुं मन्त्रं पातककोटकं ॥
५४ ॥ मुनिर्धनुष उवाच ॥ कृष्णाय कालुदेवाय कृष्णे पाप्मासने ॥
पुणत कवेदा नाशाय गोविंदाय नमो नमः ॥ ५५ ॥ कृष्ण उवाच
॥ कृष्णोऽस्मि रणादेव पापक्षीणात पञ्जरः शतधा भेदमाप्नो
ति गोविन्दं हतो वधा ॥ ५६ ॥ दुर्गेधनु उवाच ॥ ज्ञाताभिधर्मं न च
मे पुनृतिर्गामिपार्ज न च मे निवृत्तिः ॥ केनापि देवेन हृदि स्थिते
न यथा निपुणोऽस्मि तथा कुरे मे ॥ ५७ ॥ यज्ञस्वगुणदोषेण कृ
म्यर्ता प्रधुसूदनः ॥ अहमेव मर्हन्तुं मम दोषो न विद्यते ॥ ५८ ॥
मम हर्मसादुभावेन ॥ भृगु उवाच ॥ नमो मेव तव गोविन्द कर्णो
तः शताधिकं ॥ ददातु ध्या रणा मुक्तिं विना मुखां ममो गतः ॥ ५९ ॥
॥ गोमहर्ष उवाच ॥ नमो मे नां यथा पादपंकजं कर्णं हृदि नापु
स्त पुनर्न लभः ॥ वदामि वातं यथा नाम निर्मलं स्मरामि नां सु
ता तत्त्वमव्ययं ॥ ६० ॥ दौ नकु उवाच ॥ स्मृत्वा सकलं कृष्णं
मम हर्मं यज गायते ॥ पुनर्न लभं नित्यं गुणमिहा रक्षितं ॥ ६१ ॥
॥ गङ्गा उवाच ॥ नाहं यतोति मन्त्रोऽस्मि नामास्ति वदति नी ॥

थापितरुधे घोरे पतती ते त ददुभुतम् ॥ ६२ ॥ दाः ॥ अऽवाच ॥
विंता लप धुलि प्री-त्रैर्न किं र्थं लप जना दने ॥ नमो ना रा रा ॥
पेति प्र-त्रः लवर्ध ला प्रकः ॥ ६३ ॥ ने न म्मा ज न ड वाच ॥
॥ तत्र पो गे इव रः कुरु गो ज त्र पा धो धनु र्ध ॥ तत्र पो
विंता लप धुलि प्रीति प्रीति प्रीति प्रीति ॥ ६४ ॥ अर्पि गो ए ड वाच ॥
रिं रति पाशानि दुष्ट चित्तै रपि लुप्तः ॥ अत्रि च्छ पापि ल
लु लो द ह ल्पे व हि पावकः ॥ ६५ ॥ जग द्वा र ड वाच ॥ ल कृ दु
च्यति त के न ही रित्य क्ष र ड प म् ॥ बहुः प्री क्त्वा ले न मो
क्षाय गमनं उति ॥ ६६ ॥ जेः ॥ लप ड वाच ॥ हे शि के र लता
रु जे तर्ब दा प्र धु र्धिये ॥ ना ए व रा रा व्य जी पू र्ध चि व
हे नि रन्ता म् ॥ ६७ ॥ जाल ड वाच ॥ स तं ल ल्पं पुनः ल ल्पं
त्र मुत्ता य चो च्य त ॥ नने दा अ प र्द शा ल्व न दे वः के दा वा
जा ॥ ६८ ॥ धन्यं त र्दि वाच ॥ अ च्छ ता न त गो विं द ना मे
अथा रा मे ल ज्ञातुः ॥ न र्प ति ल क ला ले गाः स ल्पं ल ल्पं
दा मे ॥ ६९ ॥ मा र्क ए दे य ड वाच ॥ सा हा नि ल ल्प ह चि
ला चो ध्र ज म् उ ता ॥ य मु हू र्त्तं क्ष णं वा पि वा लु दे व न चि
तयेत् ॥ ७० ॥ अत्र लप ड वाच ॥ नि मि र्त्त नि मि र्त्ता दु र्वा प्रा
नी विंता चि न न म् ॥ कुरु को र्ति ल ह ला रा ध्या न मे र्त्त
दि ले ते ॥ ७१ ॥ मत्र ला क्म र्ण रा वा चा ये स्म र्ति ज ना द
॥ तत्र तत्र कुरु क्षय म् प्र का गो ने मि र्त्त व न म् ॥ ७२ ॥ श्री शु
ड वाच ॥ अना लो ज लव दा ला लो वि च्छा र्थे व पुनः पुनः ॥ ७३ ॥ मे र्त्त
नि ल्प न र्धे को ना ए व रा ल द्वा ॥ ७४ ॥ श्री महा दे व ड वाच ॥ रा रा
च न व चि ड्वा चि मु ल्प क ने व ॥ अत्र ल प म् र्त्त वी तो र्त्त व
धो न म् रा य गो र्ति ॥ ७५ ॥ शौ न क ड वाच ॥ भोज ना च्छा द ने चि
लो वृ था कु र्त्त नि वे क्षा वा ॥ को ने वि र्त्त भो दे वः लज्ज का
कि मु पे दा ते ॥ ७६ ॥ र्त्त वृ क्षा द का दे वा च्छ म् र्त्त तपो धना
॥ की र्त वी ति मु र्त्त र्त्त दे व नो ए व रा वि र्त्त म् ॥ ७७ ॥ नि न र्त्त उ म्
र ड वा च ॥ ल ल्प ह लि ग दा च र्त्त म् र्त्त र्त्त ल ना ह न म् ॥ र्त्त वः

वसोदस्य धर्मस्य परिहृता ॥ १३॥ रक्षिता चरन् वसन्
सत्यजनस्य च रक्षिता ॥ वेद वेदांगतत्त्वज्ञो धनुर्वेद-न
मिच्छित ॥ १४॥ सर्वदा स्वार्थतत्त्वज्ञः भुक्तिमाप्नुति
मानवाय ॥ सर्वलोकप्रियः कायुरदीनामाविचक्षणा ॥
१५॥ सर्वदा उन्निगतः साधुः समुद्रवर्षिणीः शायः सर्व
समस्तैर्न सदैव प्रियदर्शन ॥ १६॥ सच सर्वभूषणः कोल
जायदवधत्तः ॥ समुद्रवर्षादीर्धर्षणप्रदातिव
॥ १७॥ विष्णुना सह सावीर्यसोमवत्प्रियदर्शनः ॥ कालागु
प्तदृष्टः को धेः क्षमया पृथिवीसमः ॥ १८॥ धनदेन सम
त्वात् सत्यधर्मद्वारा ॥ तमेव शुभं लंघनं समं तत्त्वज्ञ
दमम् ॥ १९॥ मेव मेव शुभं शुभं विषयं ददार्थात्तत्त्व
॥ कुतूहलीनां हितैर्गुरुपुत्रप्रियकाव्यका ॥ २०॥ लोक
राजेन सर्वप्रोक्तं मेव त्रीणां महीपतिः ॥ तन्नामिदं क
र्त्तव्यं राक्षसैर्गर्भान् ॥ २१॥ पूर्वजन्म
द्वेषेण मेव मया चतः ॥ विवाहस्य च समस्तभारत
मेव मेव ॥ २२॥ स सत्यवचनादात्मना धर्मकायेन सर्व
नामिनामनामानसुतं समं ददार्थः प्रियं ॥ २३॥ सत्य
वर्त्तनीः पुत्रिका मनुजाजयन् ॥ पितुर्वचनविद्वान्मे
कस्याः प्रियकारणात् ॥ २४॥ तैर्गुर्तैर्प्रियो भूतात्तत्त्वज्ञ
मया ॥ २५॥ सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं
वर्त्तनः ॥ २६॥ भ्रातरं ददिते भ्रातुः सौभ्रातृमनुदर्शयन्
राजस्य ददिते भ्रातुः सुमित्रानन्दवर्त्तनः ॥ २७॥ जनकस्य
कुले जाता देवसायैव निर्मिता ॥ सर्वज्ञस्य सत्यं जनाय
सा सुतसायैव ॥ २८॥ सीतायैव सुगतायैव महीपते
सायैव ॥ सीतायैव सुगतायैव महीपते ॥ २९॥ सुगतायैव
सुगतायैव सुगतायैव सुगतायैव सुगतायैव सुगतायैव

[illegible]

मुक्ता... ॥ ४७ ॥ निजघान... ॥ ४८ ॥ रक्ष... ॥ ४९ ॥ ततो... ॥ ५० ॥ गृध्र... ॥ ५१ ॥ कव... ॥ ५२ ॥ अत्र... ॥ ५३ ॥ गच्छ... ॥ ५४ ॥ त... ॥ ५५ ॥ त... ॥ ५६ ॥ सु... ॥ ५७ ॥ अ... ॥ ५८ ॥ सु... ॥ ५९ ॥ सु... ॥ ६० ॥ सु... ॥ ६१ ॥ सु... ॥ ६२ ॥ सु... ॥ ६३ ॥ सु... ॥ ६४ ॥ सु... ॥ ६५ ॥ सु... ॥ ६६ ॥ सु... ॥ ६७ ॥ सु... ॥ ६८ ॥ सु... ॥ ६९ ॥ सु... ॥ ७० ॥ सु... ॥ ७१ ॥ सु... ॥ ७२ ॥ सु... ॥ ७३ ॥ सु... ॥ ७४ ॥ सु... ॥ ७५ ॥ सु... ॥ ७६ ॥ सु... ॥ ७७ ॥ सु... ॥ ७८ ॥ सु... ॥ ७९ ॥ सु... ॥ ८० ॥ सु... ॥ ८१ ॥ सु... ॥ ८२ ॥ सु... ॥ ८३ ॥ सु... ॥ ८४ ॥ सु... ॥ ८५ ॥ सु... ॥ ८६ ॥ सु... ॥ ८७ ॥ सु... ॥ ८८ ॥ सु... ॥ ८९ ॥ सु... ॥ ९० ॥ सु... ॥ ९१ ॥ सु... ॥ ९२ ॥ सु... ॥ ९३ ॥ सु... ॥ ९४ ॥ सु... ॥ ९५ ॥ सु... ॥ ९६ ॥ सु... ॥ ९७ ॥ सु... ॥ ९८ ॥ सु... ॥ ९९ ॥ सु... ॥ १०० ॥ सु...

नमः ॥ अतिशय च ए मे एतदा वा निबर्ध पति ॥ ६२ ॥ सति
दुर्बलतय कथं वा सा सवा नः ॥ सुगीवः हीदित कथा लो
नितीवीये हा तद्यवे ॥ ६३ ॥ हा घन पुत्र पाथं पु दुर्दुमे
काय सुत मम ॥ दर्श पा मास सुगीवो म हा पर्वत लनि
नृ ॥ ६४ ॥ उत्तम यिवा महा बाहुः प्रेक्ष्य चास्थि महा ननः ॥
पादीगुणेन चि क्ष प र्ण पू र्ण दहा को जनन ॥ ६५ ॥ विने द य
पुनस्ताना न प्रेक्षे न मे हे सु हा ॥ गिरि हस्ततर्ज चैव जनन
नृत्तं प तदा ॥ ६६ ॥ ततः पुति मनास्तेन विश्व स्तः न म हा
कपिः ॥ किं किं च त मल हिते रगा म च गु र्णित दा ॥ ६७
॥ ततोऽगर्जद रि नः सुगीवो हे म र्णित नः ॥ तेन नाद न म
हता निर्ज ग म ह हाश्च ॥ ६८ ॥ प्रव म न्य त दा ता ए सु
गाव रा सना गतः ॥ निर घा न च तत्रै व दृष्टे न दे न ए घ
॥ ६९ ॥ ततः सुगीव वचनं दुत्वा नाति न मा ह वे ॥ सुगीव
मेव त दा म रा घ वः पुत्र पाद पतु ॥ ७० ॥ सच सर्वान्
मानीष नाना वान ए र्ज नः ॥ दि हाः प्रस्था प पा मां दि
दृष्टु र जन का त्त र्ण ॥ ७१ ॥ ततो गृ ध्र स्य वचनं तं पात
नुमा च जी ॥ हात को जन नि स्ति र्णं पु पुन ज व रा र्ण वी
७२ ॥ तत्रै व स मा ध्य पु रं रा वा पा नितं ॥ दं दर्श सी ती
धर्ष ती म गो क व नि का गतं ॥ ७३ ॥ विने द पि त्वा ड नि हा
नी पु वृत्ति विनि ने क च ॥ ल मा द्वा ल्य च वे द र्ण म र्द पा म
स तो र र्ण ॥ ७४ ॥ न च ले ना गु गा ह त्वा ल प मं त्रि लु ता
मि ॥ गूर म र्क्ष च नि धि स्थ गु ह ए स मु पा गतं ॥ ७५ ॥ तं
त्रे रा न्मु क्त मा ल्म न जा वा से ता म हा दृ ए व ॥ म र्क्ष व
रा हा ला नी रे म र्क्ष रा हा न्य दृ दृ च पा ॥ ७६ ॥ ततो द
र ध्या पु रं र्ण मृ ते सी र्ण मे नि नी म ॥ तत्रै व म मा

पुनः पुनः प्रहसि ॥७७॥ कोऽपि मन्त्रमहात्मनः ॥
आह्वयं पुनः पुनः ॥ न च वदन् वदन् ध्यात्वा हृदये लीले
ति तत्त्वतः ॥७८॥ ततः सुग्रीव ललितेन का तीर्त्तुं प्रसे
धः ॥ समुद्रं दत्तो न पा माल हृष्टे तदित्थं सन्नि ॥
७९॥ दत्तं माला माला का न स मुद्रा ललितं जति ॥
मुद्रा वचनं चैव न च लेतुं मन्त्रा एव ॥८०॥ तेन गत्वा पु
नः ललितेन रावणं माहवे ॥ रामः सीता मनुजा प्य प रं वि
दा मुद्रा मन्त्र ॥८१॥ तानुवाच ततो रामः पद्मं नमस्क
रन् ॥ ७८॥ मुद्रा माला स सीता विवेका ज्वलन्ती सती ॥८२॥
ततोऽपि वचना सीता ॥ इत्यु विगत क लला ॥ कृतं तात
मन्त्र ता नैवोक्तं स च एव ॥८३॥ सदेव लीला तु
राधवः स मन्त्रा ननः ॥ वमो रामः सुमहदः पूजितः सर्व
देवैः ॥८४॥ अत्रि विच्य च नैका धी राक्षस देवैः च ए
॥ कृतं कृतं लला रामो विज्वाः पुनः मोदतः ॥८५॥ दत्तं
नाना विधा स मुद्रा पच वान एव ॥ पुनः पुनः पुनः
तो रामः पुनः पुनः पुनः पुनः ॥८६॥ आह्वयं मा
मं गत्वा रामः ललितं पच वमः ॥ आह्वयं ति कीर्त्तना हनु
मं तैव स मन्त्र ॥८७॥ पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः
ललितं लला ॥ पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः
दा ॥८८॥ नदि गामेन ललितं मातुलि ललितोऽनघ
॥ रामः सीता मनुजा प्य राक्षस पुनः पुनः ॥८९॥
पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः ॥ निरा
मया ह्य रोगं च दुःखं च मन्त्र वमः ॥९०॥ न पुनः मन्
त्रं चिदु द्दति पुनः पुनः ॥ नार्थं चिदु द्दति
विमं भविष्यति जति पुनः ॥९१॥ न च विमं नार्थं वि
ना न च विमं नार्थं विमं नार्थं विमं

[illegible]

१५५ आदित्य लोचनम् ।

॥ १ ॥ नवग्रहाणां सर्वेषां शुभादीनां प्रथमः
 पृथक् । पीडा च दुःसहा एतज्ज्ञा यते सततं नृणां ॥ १ ॥ पी
 डा नाशाय राजेन्दुनाम्ना निष्प्राप्तुमास्त्यतः ॥ शुभादीनां च
 सर्वेषां पीडा नश्यति स एव तः ॥ २ ॥ आदित्यः सविता सूर्यः
 पूषा इन्द्रः शीघ्रगो रविः । भगस्त्वष्टा इयमा ईसा हि
 सिस्तो जो निधि ईरि ॥ ३ ॥ दिननाथो दिनकरः पृथ्वीपु
 पुभाकरः । विभा वसुर्वेदकृतविदाज्ञो वेदकाहनः ॥ ४ ॥ इ
 रिदम्बः काजवेन्द्रः कर्मासाक्षात्तगत्यतिः । यज्ञीनिवे
 धनो भागुर्भास्करः कर्मणा कहे ॥ ५ ॥ हादशास्त्रा वि
 भा कर्मा जो हिता इ सा मा नुद । जगन्नाथो इन्द्रा न्दी
 का नात्मा के शुभा नात्मा जगन्नाथः ॥ ६ ॥ भूतो भवता गुह्यतः स
 त्वकर्मनमस्कृतः । जिपा नुसु मर्षका सो भास्वा इति न
 ॥ ७ ॥ इवा नोम विरि सवर्मा सो नोम विरि
 मा तैराज्ञा विरिहः सूर सप्तनाजो कताजगत्तः । जग
 त्जगत्ता द्वा द्वि हा नोम विरिहा जगत्तः । सप्तनाजो जगत्तः
 जगत्तः सप्तनाजो जगत्तः ॥ ८ ॥ विरिहा नोम विरिहा
 दिवा कर्मा । धन्यतः कर्मा हि हर्षदुःखदुःखविनाशः ।
 धन्यतः कर्मा हि हर्षदुःखदुःखविनाशः ।
 धन्यतः कर्मा हि हर्षदुःखदुःखविनाशः ।
 को जगत्तः कर्मा जगत्तः आत्मा जगत्तः । नास्य गो जगत्तः
 दवा हर्षदुःखदुःखविनाशः । जीवात्मा जगत्तः कर्मा जगत्तः
 सप्तनाजो जगत्तः ॥ ९ ॥ इन्द्रो जगत्तः सप्तनाजो जगत्तः
 सप्तनाजो जगत्तः ॥ १० ॥ श्रीददहा नदुन्दुभ्यो नोम विरिहा
 कर्मा ॥ ११ ॥ सो विरिधुनुदः के तु कर्मा जगत्तः कर्मा
 भु । सप्तदेव जगत्तः कर्मा जगत्तः ॥ १२ ॥ यज्ञ
 तेन जगत्तः जगत्तः कर्मा जगत्तः । सप्तनाजो जगत्तः

निर्भुं कः सव हो म वि न र्जितः ॥ १५ ॥ उच वान धर वाः
आ यत सन लं दायः ॥ रवि गो रे पठ ध्रुवा ना मा मे ता नि
भा सत ॥ १६ ॥ जी डा मा नि र्ज वे त ल गु हा हां च वि हो सत
॥ म धः सु व म वा प्रो ति वा पु दो धिं च नी द न म् ॥ १७ ॥

इति श्री भविष्य पुराणे आदि त्म लोचं ली पूर्ण म् ॥

१५७ अक्ष एक लोच म्

आमो शाप न म् ॥ ॥ अक्ष एकः स मि धो लो हि ता ह्य धा लु त
जु मा र म् दु मा सो मो म हा का यो धर पु दः ॥ १५८ ॥ अ गा ह
त दृ वि क र्ति रो म रु डा ना ना ह नः ॥ वि द्यु त्पु लो रु हा क र
का स दो ध न द लु ज ॥ १५९ ॥ सा म गो न पि को र क व स्रो र
का प त द्वा ए लो हि ता र क न र्ति न ल र्ज क र्ति य को ध वा
र क वा म धा रे नि न र्जु ड जी गु हा ना पु द म् नो जा न्ते
त न्नि नो म ल्य पः पठ सत त न ॥ १६० ॥ अ प त ल ज च दो
म दारि र्मु व वि न ह्य ति । ध र्म गा प्रो ति वि पु न्ति स्त्रि य
मे व स नो ए मा म ॥ १६१ ॥ वी ह्यो द्यो त क र्ति पु री ज म ते ना यो
गु ष ॥ यो ड र्ज यै द कि नो म ल्य र्ज ह्नी न ह पु ल्य व ॥ १६२ ॥
मि न ह्य ति प्री त च त ल्पे गृ ह कृ ता धु व म् ॥ १६३ ॥

१६४ उच पञ्च विंशति ना म लोच म् ।

आमो शाप न म् ॥ ॥ उचो रु दि म त र्ति हो रु दि दा ता म् न
दः ॥ वि द्यु त्पु ल क र्ति का धा मः क र्ज ने गो म नो ह ॥ १६५ ॥ गु री
प मा र्ति हि ता यो न ल र्ज हो द या र् ॥ वि द्यु त्पु ल क र्ति
लो म्पो रु दि वि व र्ध न ॥ १६६ ॥ च द्वा ल म्पो वि ह्य रु द्वा क
र म्पो शा मि ना य व ॥ गु र्जी डा हो दा पु च धा न्ते म् न
॥ १६७ ॥ लोच नो क र्ति पु लः लो म्पो म्पो र्ति र्ति ना दो गु रि क र्ति

॥ जन्म विहाति नामानि बुध लै तातो य पेठे ॥ ४ ॥ सुख
बुध सदा तस्य जीवा सर्व विनश्यति ॥ तद्विने वा पेठे द्य
सु लज्जते समनो गतम् ॥ ५ ॥

इति श्री पद्म पुराणे बुध पञ्च विहाति नाम लोच
नमा प्रम १।

२०० बृहस्पति लोचनम् ।

भीमो ह्येवमनः ॥ गुरुर्बृहस्पतिः शिवः सुरार्च्यो विद्वान्
॥ काशी ह्येवमनः दीर्घायुः पीता न्यते युवा ॥ १ ॥ सु
धा हां वर्महा धीरो गुरुर्बृहस्पतिः ॥ दयाकरः सौम्य
तिः सुरार्च्यः बुद्धिमान् शुभिः ॥ २ ॥ लोकेश्वरः लोकगुह्यनि
शा नीतिका कः कास्य पतिः श्रीगोरो सेवे दये शुभिता म
॥ ३ ॥ भक्त्या बृहस्पतिं पूज्यत्वा नीतिमयं निजं पठेत् । अ
पि बलवान् श्रीमा-पुत्रवान् भवेत् ॥ ४ ॥ शिवे इति
हा लं जन्म जार्ज नश्यति नश्यति । यः पूज्यते बुध
न गन्धा कृतान्मये ॥ ५ ॥ पुष्पदीपाद हा देव्यः पूज्यते
बृहस्पतिः ॥ ब्राह्मण-भो गम्भीरा च पीतः शुभः श्री नरेन्द्रो
॥ ६ ॥

इति श्री लक्ष्मण पुराणे बृहस्पति लोचनम् ॥ २०० ॥

२०१ शुक लोचनम् ।

भीमो ह्येवमनः ॥ १ ॥ शुकः काव्यः सुखरता सु सुखः सुखः
सुधीः ॥ २ ॥ शुकः कुतः प्रवक्तुः शुभः शुभः शुभः शुभः
नीतिज्ञो नीतिः बुद्धिः नीतिः शान्तिः शान्तिः शुभः शुभः
वदा सुखः सुखः सुखः सुखः सुखः सुखः सुखः सुखः
शुभः शुभः शुभः शुभः शुभः शुभः शुभः शुभः
शुभः शुभः शुभः शुभः शुभः शुभः शुभः शुभः

सुतमाह । विद्यामेव त्वयंतस्ते शुक्रं नष्टा ददाति च ॥

४॥ इति श्रीकृष्णपुराणे शुक्रलोचनं पूर्णम् ॥

२०३ इति श्रीकृष्णपुराणे

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अस्य श्रीकृष्णपुराणे लोचनं सप्तदशोऽध्यायः ॥
श्रीकृष्णो देवता । त्रिष्टुप् धृन् ॥ इति श्रीकृष्णपुराणे लोचनं विनियोगः
॥ दशार्थ उवाच । को ह्येतां नको रीतिं प्रमोदयन् भुः कृत्वा
हानिः पिंगलप्रदं लोचनं । नित्यं स्मृतं तेन ह्येतेन पीडितं तस्मै
नमः श्री विनन्दनाय ॥ १ ॥ सुहृत् सुहृत् किमुद्वेगो मेऽहं गन्धर्ववि
द्याधरपन्नगान्धर्व । पीडयति सर्वं विषमस्थितेन तस्मै ॥ २ ॥ न
राजोऽहं पहावो मृगेऽहं न्याय्ये कीदृशं पतङ्गं मृगाः । पीडयति
सर्वं विषमस्थितेन तस्मै ॥ ३ ॥ देहाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र
तेनानि वेश्याः पुरपन्नानि । पीडयति सर्वं विषमस्थितेन तस्मै
॥ ४ ॥ तिलैर्वैकुण्ठं शिखरं गुह्यं न दानं नो हेतुनीनाम्बरं दानं तोना
नो गणेशाय नमः । इति श्रीकृष्णपुराणे लोचनं विनियोगः ॥ ५ ॥
इति श्रीकृष्णपुराणे लोचनं गुह्यं न दानं । यो यो गिरीश्वरं ने गतोऽपि
सुहृत् तस्मै ॥ ६ ॥ अन्य उवाच । ह्येतां पुबिष्टं स्त्रिदीपको
न सुखी स्यात् । गृहाद्गतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै ॥ ७ ॥ सु
चिन्तयन् भूर्भुवः स्वः प्रजापतिराहरीशो ह्येते विनामी । हृदयस्थिधा
मयः सान्द्रमूर्तिस्तस्मै ॥ ८ ॥ इति श्रीकृष्णपुराणे लोचनं विनियोगः
नित्यं सुपुत्रः स ह्युवाच । पठेत्तु सांख्यं पुबिजोगं पु
त्राप्नोति निर्वर्णं पदं तदने ॥ ९ ॥ को ह्येतां पिंगलो बभ्रु
हो रीडोऽनको वमः । लोचनं इति श्रीकृष्णपुराणे लोचनं विनियोगः
स्तुतः ॥ १० ॥ इति श्रीकृष्णपुराणे लोचनं विनियोगः पठेत्तु
इति श्रीकृष्णपुराणे लोचनं विनियोगः ॥ ११ ॥

विति

इति श्रीकृष्णपुराणे लोचनं विनियोगः ॥

१५५ नैका विहाति नाम लोचनम् ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीकृष्णपुराणे लोचनं विनियोगः ॥
प्रातिपत्तिर्यो नोदुःखाश्च तेनाश्रयस्तथा ॥ १६ ॥ सुधादध

॥ इति श्री कुरु संहिता लोः पञ्चविंशतिनाम लोः

२५२ मृतसजीवनकवचं ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ एवमासाध्य गोरीशं देवं मृत्युं जयेन्मृत्युं । मृतं
 जीवनं नाम्ना वचं पुनरेतदा ॥ १ ॥ सायं सायं रात्रिं पुनरेतदा ॥
 दुष्टात्तमं शुभम् । महादेवस्य वचं मृतं जीवनं नाम्ना वचं ॥ २ ॥
 समाहित मनो भूत्वा हृत्पुष्पं कवचं शुभम् । शुभे तद्दिव्यं कवचं
 तस्यैव सर्वदा ॥ ३ ॥ नारायण करो यथा सर्वदेवनिषेवितः । मृ
 त्युं तथा महादेवः प्राच्यां प्रां पातु सर्वदा ॥ ४ ॥ दधानः शक्तिं मे
 यां त्रिभुवः सः पुनः पुनः ॥ सदा शिवोऽग्रे रूपी मा मा ग्रे यो
 पातु सर्वदा ॥ ५ ॥ अद्या दहा भुजो जेतो दहा भय करो विभुः । य
 मरूपी मेहेतो मां मेहेतो सर्वदाऽवतु हादेवो दाहि रा स्यां तदा
 ऽवतु ॥ ६ ॥ त्वद्भाय करो धीरो रक्षो गणनिषेवितः । रक्षो रूपी
 मेहेतो मां मेहेतो सर्वदाऽवतु ॥ ७ ॥ पादाभय भुजः सर्व रक्षा
 रनिषेवितः । पादाभय भुजः सर्वदेवः पश्चिमे मां तदाऽवतु ॥ ८ ॥
 महाभय करोः प्राणो मां तदाऽवतु ॥ ९ ॥ नाभ्यो मां तदाऽवतु ॥
 मन्त्रः । सर्वान्मात्रादिभ्यो जातु मां हारः पुनः ॥ १० ॥ हृ
 त्पाभय करोः सर्वविद्यानां प्रधिनायकः । हृत्पाभयना तथे हृत्पा
 न्यो जातु मां पार्श्वे हृत्पा ॥ ११ ॥ दक्षिणे भुजो रूपी विभो
 तदाऽवतु सदाऽवतु । हृत्पाभय करोः जातु तदाऽवतु हृत्पाभय
 ॥ १२ ॥ भू प्रध्यं सर्वजो हृत्पाभय करो जातु तदाऽवतु ॥ १३ ॥ भू
 र्गमं गिरिनाः जातु तदाऽवतु ॥ १४ ॥ नाभ्यो मां तदाऽवतु
 देवः ओं ह्रीं जातु वृषभध्वजः ॥ १५ ॥ मां तदाऽवतु हृत्पाभय
 ओं गिरिनाऽवतु ॥ १६ ॥ मृत्युं जयो मृत्युं जातु तदाऽवतु
 भू भवताः । पिनाकी मत करो जातु त्रिभुवः हृत्पाभय ॥ १७ ॥
 ॥ जयं वचं । सानो जातु तदाऽवतु ॥ १८ ॥ नाभ्यो मां तदाऽवतु
 हृत्पाभयः पार्श्वे मे • पार्श्वे तीजतिः ॥ १९ ॥ हृत्पाभयं गिरि
 मे हृत्पाभयं पुनः पुनः ॥ २० ॥ हृत्पाभयं जातु तदाऽवतु
 तदाऽवतु ॥ २१ ॥ जातु तदाऽवतु तदाऽवतु तदाऽवतु

पादौ मे सततं पातु लोकवन्द्यः सदा शिवं ॥ १८ ॥ शि
 राः पातु मे भागीभवः पातु सुखानन्दम् ॥ मृत्युं तयो म
 युष्यं चित्तं मे गणनायक ॥ १९ ॥ सदा ह मे सदा दा
 काज काजः सदा शिव । एतन्ने कवचं पुण्यं देवतानां
 दुर्जयम् ॥ २० ॥ मृतसंजीवनी नाम्ना महादेवे नमो
 सदा सावर्तनं चास्य पुण्यं रक्षा मीरितम् ॥ २१ ॥ य
 च्छुशुभं नित्यं आवयन्तु लमाहितः । लकाज मृत्यु
 मित्र सदा युष्यं लमहन्तु ॥ २२ ॥ हस्तेन यदा स
 द्धु मृतं संजीवयत्यनेन । आश्रयो व्याधय लल्ल
 वति कदाचन ॥ २३ ॥ काल मृत्यु मधि प्राप्ते म
 जयति सर्वदा । अग्नि मादि मुहोम्भं तज्जन्तं ज्ञानको
 ॥ २४ ॥ युद्धा रम्भे पादौ लक्ष्म्या विंशति वा कम् ॥
 मध्ये स्थितः शत्रुः सदाः सर्वं न दृश्यते ॥ २५ ॥ नव
 नि काश्चाः सदा यं कुर्वन्ति तत्त्व वे । वितपन्तं सततं देव
 मध्येऽपि सर्वदा ॥ २६ ॥ पातु सुखाय सततं मे प्रह
 रं पुनः । अक्षयं जने लोके सिद्धये क वाचक
 ॥ २७ ॥ सर्व व्याधिविनिर्मुक्तं । सर्व रोग नि मारुतं ।
 म रणे भूत्वा सदा लोडकागर्भि क ॥ २८ ॥ विम रण्य मे
 लोऽन्ते का न्या य भोगांश्च दुर्लभा न् । तस्मादिदं म
 यं कवचं लभुदा ह तम् ॥ २९ ॥ मृतसंजीवनी नाम्ना द
 ते हपि दुर्लभम् ॥ ३० ॥

इति श्रीवसिष्ठ प्रणीतं मृतसंजीवनी नाम्नं लं
 मृतं लं ॥ २४ ॥ नवनाग नाम्नं लं ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ अनन्तं नाम्नं किं नाम्नं पद्मनाभं च कं वृजम् ॥ १ ॥
 पातु मे भागीभवः पातु सुखानन्दम् ॥ १ ॥ एतानि नवनागा निना
 च भूताः कनकाः सदा यन्त्रे नित्यं पातुः काले विरोधतः ॥ २ ॥ तस्मै
 व नमो नमः । सर्वं वित्तं यो भवेत् ॥ ३ ॥

[illegible]

का १२३ वीदि मोक्ष होई का ४० लिंगा मन्त्राने का ५०
पिब भावन का - १०१० अनिमै जुन न जागला का १३२ वीदि
पन्ना का धुला १४० तपनि धुला ८० धौ दिन जाग
का १८० गरी रात्र का १००० पुत्रु तीका पुको ८०
गरी का का १२० हाथ मोला का २०८ दुभा गुना
को १८२ मगडा जितना को ४८ छात्र नार्दि दुः ख नेटे
का १३२ कापु गुला का १२ चिंता मरा का २५
वहुला का ५५ का का ८० आस कात का २० वि
पुत्रु तीका ४० ह ५५ ५५ मने का १०३ आत का
का २१ गार्दि सी का दिना को ८० आन लेना का ८४ ल
र को वी का का २० कात्र का ४० न का का
का २८ वरु का ३४ मृत का का ३३
वी का का १००००० मोक्ष का ३० निना का
का ८० मोक्ष का का का का ५० गात्र का
त का का २२ वी का का १००० वी का का का
को का १०८ का का का का १०००० का का का
द का का २४ वी का का १२ का का का ३५
मोक्ष का का ५५ का का का ३२ वी का
मोक्ष का का ५५ का का का का ५५
लो का का ५५ का का का का १५
मोक्ष का का का का का १४ का का का का
का ५८ का का का का १८ का का का का
का १८० का का का का १०० का का का २० का का का

०। रहे ४० लीभन होई का ७० दात दुलो रहे १५ मनी कर्प
होई का ५५ विजय माका ५५ ३२ धाई न लाग्या १२० सु
लोकारे होवे का ११० भूत की लोकाही १३२ वि छाडी न
लागे का ३२ जेत का डो मिलन आवे का ५०० का दन ला
ग्या ३४ दोहरा रो वी धा होई का ३८ धात प्राप्ति होई
का ५०० भाई पुह जवले होई २१० दे ला मित्र मा दे तो
अग मो भदे न होई का १००० मिथो भोजन मित्र न २८
गजे का धंतो ई पाये न हो ५४ लेवा पुष्प गते ८० लवी मि
डि हो १२० मृतक का मि पका २२ लीवले होवे का ६८ मृ
गई की ते का ४० ~~का~~ ऐजाई का १५० माहा माई तो चान न जागे
का ६४ दुका की ते का ७० मरुत मरुत र सो होवे का ७२ मि
मास मित्र का ७२ काज विजय का ७२ आदि न जितने का ६२
मोच जीवे का १०० लज को र हा आने का २० ताप छुटे जा
ई का ३४ भूत न लागे का ६४ हु तागे मरुत न हो का ३० पा
हे द मारो मित्र का ॥ का गज मा जने ली के धाति ई पा
धारे ना हो २००॥ ॥ इति श्री का जी तीव्र हृद का मने अंक
वि नाम गी लमा प्रभु पुभम ॥ ॥ अथ धि का विचार ॥
पुर्व धि का अनर्थ विचार । आने पे को महा दु ख भा ॥
द क्षि रा धि का धा ले धिने ॥ ने मृत्यु को नि ली धा लन
को जे १ प म्नि म धि का मो धो भोजन गे ज पत्रे । वायु
व को ना ई ता धि का मान लमान ॥ लवी मि डि ई मान को न
॥ आकास धि का गमन न हो को जे १ अपन धि का जो न

गमनवरी प्रदुष्टीदिज मनन हो जाय ॥३॥

मेळ

वृष

मीथुन

कर्कट



 अ अ क रो म आ पु ना अ

सिंह

वृश्चा

तुला

वीर



 म पु ट र ची ला वी अ म

धनु

मकर

कुंभ

मीन



 पु पु उ अ च द उ उ रे

राख २ राख लया दोष	मेळ १ पुन पु तजा दोष	मीन १२ सो गो नी जो दोष
क क क	दोष नी चार य	मकर १० मजद वता पा दोष
सि क क	तुला १ दोष जाज पा दोष	धनु ८ मजद वता पा दोष

॥ गमन गहन गान नि ले बाहुन विन्नाह ॥

तिथी का नक्षत्र जो रूद्र के भाग में लगे २५ वें पा
रे रहे सति ४ रे भे सु ५ रे ज्ञान ६ रे सिद्धि ७ रे
काय ८ रे पुत्र ९ रे हीम १० वाहन की चार ॥ ३५ ॥

१ गुरु ५ धन हानी २ घोरा नर जात्र ३ हानि जात्र ४
 ५ गीता नर जात्र ६ स्याज विना नर जात्र ७ सिं ह प्रिती
 ८ प्रभु ९ नर निम्न ज ८ प्रभु सर्व सिद्धि ९ हानि लुप्त
 नर जात्र ॥ ॥ प्रभु पश्य विवेक ॥

॥ अथ पञ्चलिखित ॥

श्रीगणेशाय नमः	श्रीग	श्री	श्रीगणेश	विभीषण	श्रीगणेशाय नमः
स्वामीनाथ	म	मिता	मन		॥ १ ॥
राज्यान्त्याः लि	कुं	राव	श्रीगद	गुमीवो	कार्यनाश
तापान्दुखप्रेषक	क	रा			सुखिनो ॥ ३ ॥
॥ नमोऽस्तुते	दे	भू	अनु	सूक्ति	सुमानलविका
विदित्वाः सर्व	दे	भू	न		वृद्धिर्धनपुत्र
आमोविभीषण	पु	गान्	नारद	मुद	शिवानु ॥ नारद
॥ १ ॥ मातापुत्र	मा	वान्			कनकश्चक्र

ॐ ह्रीं क्लीं त्र्यम्बके नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ २ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ३ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ५ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ६ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ७ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ८ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ९ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ १० ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ १ ॥
 अथ श्रीगणेशस्तोत्रम् ॥
 गणेशाय नमः ॥ २ ॥
 गणेशाय नमः ॥ ३ ॥
 गणेशाय नमः ॥ ४ ॥
 गणेशाय नमः ॥ ५ ॥
 गणेशाय नमः ॥ ६ ॥
 गणेशाय नमः ॥ ७ ॥
 गणेशाय नमः ॥ ८ ॥
 गणेशाय नमः ॥ ९ ॥
 गणेशाय नमः ॥ १० ॥

॥ आतामिदलो ॥



१ वव काम हवेन दु ल पाव ना हि ईगो फु ना त लाईमा
गाला

२ यय सब वाटे वही या य

३ रु रु तेने चि ताका को काम गा वीला रे मि दु हु न्याय
चि ताका गा

४ सोले दे रे मृ गडा होला दु दो ना त लाई ना ग न्याय को
वाह हु न्याय न गनु पदेन

५ गडा नि का काम गा ते रो मत नव हु न्याय न को ले लाई
को रि मु द नी गरी मु वा खे नी चोरी काम होला

६ लान सो तेने चि ताका को ले सो पु ग न्याय वा पे क पे ए

दुःख जा बजाई पवि पुगन्नाध

३

७ गग को ह काम डग लीग नागो काम ग-पा ते

रो भलो होना को वात वाहा

७

८ गग विना मे हेनत मा तेरो मत लव पुग छ तव को

भागो मानी छ लु व छ दे माला

९ दद

लाहो मा काम पुग जा जु विजनी होना

१० नन

आधा वात होना ता ते ए हात दे हो ए न्नाध न

गग छैन

१०

११ तत

ते हो काम होना ता दु छ पाडि ना ल

११

१२ अद तेरो वा दो लीग ए काम ग-पा लु व छि जा हो

ना

१२

१३ हुहु

ते ए वात भद्र पनी न भद्र पनी व छि का ह न्नाध न

१३

१४ छद

हुदात तेरा वा होना न थीन लीग होना

१४

१५ अअ

वाता को आग मात्रे छ हुनु क छि रु छ न पाहु १५

ज पाहुला लु न भे का व छि मा छ

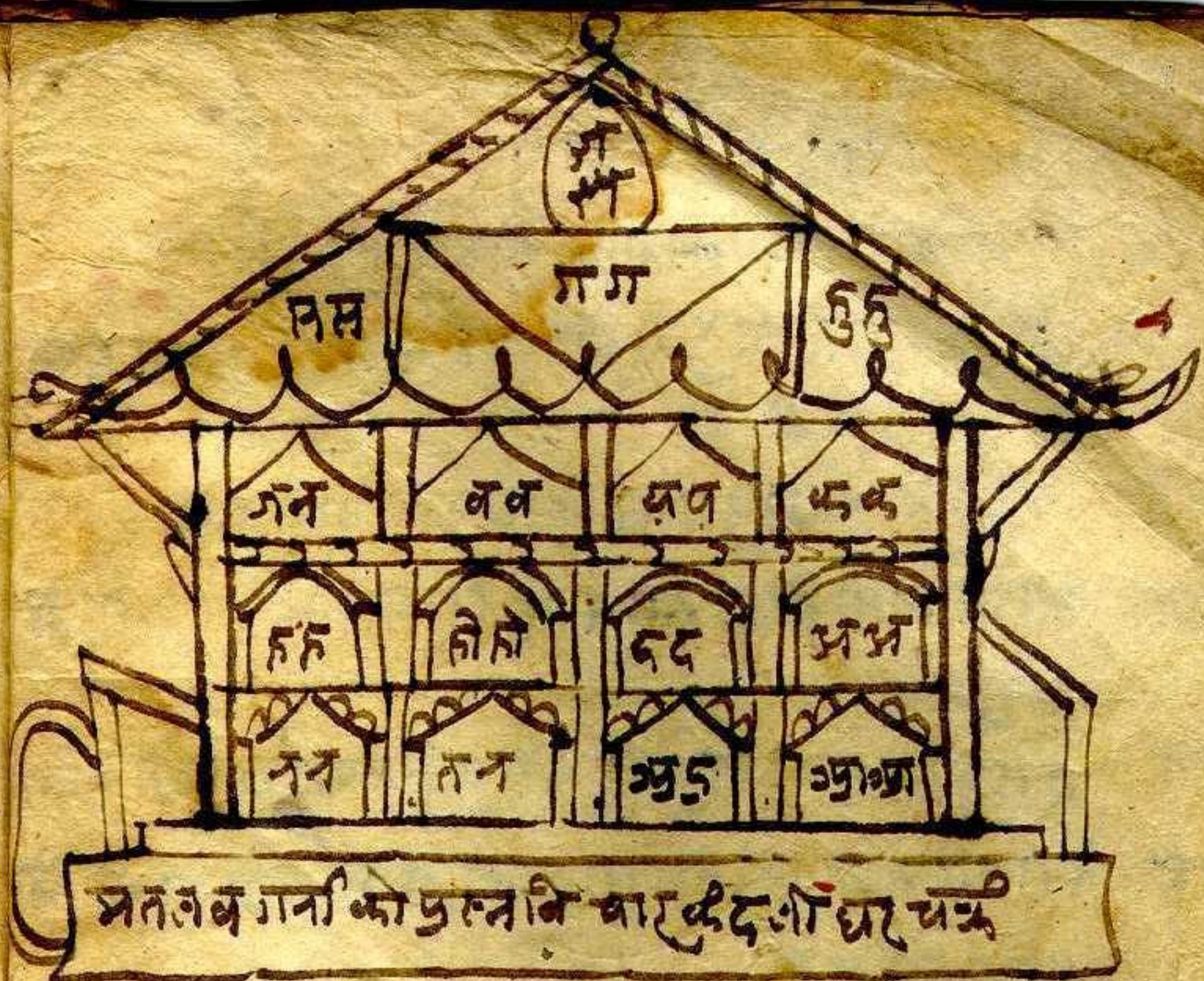
१६ आआ

ना को आधा मे मात्र छ नी को छैन भद्रो भद्रो प

नी ता वा को धा नाग ना वा ओ रे छि जो प्द ना

द नाग ना

१६



शुद्ध निष्काकाम माते हो मतलब हुन्ना है न कले जाइ को
हि चुकनी गरी हुला खेनी चोर तवर संग तेरो काम न

जा ॥
सल गोते जे। ये ताका कोछ सो पुगन्ना छ तरु क के छ
दुःख पाई जा पछी पुगन्ना छ ॥

गग को ही कामु दार लंग लागो काम गन्ना तेरो जगो हूँ छ
यो बात जान ॥

जन बीना मे हुन तेरो मतलब पुग छ तबरा जा मे भो नो
सु व दे जागा ॥

वक काम हो ये न दुःख पाई जा सुई जो कृ ला दु ल गा मा मा
जात ॥

जय सबवार बढि पाद धं दागा ॥

८५ तेन चित्तं तदा कदाचिद्वा गच्छति ॥

होसो टेटे मृगा सोला कुडा नाव नाई मागला जो वाहू चो
५॥

६६ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नत आधावाता होत नसुन तारे एकात दे हो ए न छ ज
स ये न ॥

ततः ते एवाग्र होता ता एवमप्ये एदुष्का जायते वृत्ति प्रगता

५५ ते एवां भद्रा वनी न भद्रा वनी तज्जा विदो का न जे
वनी ह्यज दे न ॥

कथं इदं ताते तवार्हो जातु कथं लग्नं होत ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अप्राप्ता ते ए वाट को आभाष मा अछु नी की छे न। अप्रो अप्रा
जनी लना के घाई जलो होला ईरो फूलाइ जाईना
सु॥ ॥ इती मत्त गव ज खल क र ॥

॥ इति सप्तमः प्रश्नः ॥

नर	दत्त	नर
मानीसु	जैदिस गवा	कापु सुकुंदली
अद	दत्त	नर

नर मानीसु आरि पा मत नर गवाको छ ता टे रे दी ज
 धो धामना नने काम मा अ न ज्वा को छ ॥
 दत्त मानीसु आरि दी ज्वा आनना नवा बहुत खुसी पाछ ॥
 अरु मानीसु चाडो आरि छ कुम नय नीपा छ ॥
 अरु मानीसु आरि छ अणन द छ मू दो छ सुती न मान ॥
 मय मानीसु आरि देन घरी पा नवा छ मर्का छ ॥
 दत्त मानीसु आरि देन घरी पा नवा छ मर्का छ ॥
 अद मानीसु वर नवाको छ देरी वर मा आरि ना मुनी साय
 मू दो छ ॥
 वद मानीसु आरि न ए वर न दु मि ठा मानीसु को छ ता रे
 हा दी ज्वा आरि ना दत्त मा नने को छ अणन मू ज्वा छ
 दिव को पुजा गर
 ॥ इ तो जैदिस देरी न छ ॥

